दिसंबर - २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

मेरा ग्रुप, तेरा ग्रुप

संपादकीय

बालमित्रों,

गेम्स खेलते समय, पिकनिक में या फिर क्लास-प्रोजेक्ट्स में हमें अपने फ्रेन्ड्स ग्रुप के साथ अच्छा लगता है। लेकिन अगर कोई हमारे साथ गेम खेलना चाहे या रिसेस में हमारे साथ बैठना चाहे, तो हम उसे शामिल करते हैं या अलग कर देते हैं? कभी-कभी हमें ऐसा लगता है कि हमारा ग्रुप बेस्ट है। और इसलिए हम किसी को अपने ग्रुप में शामिल नहीं करते। लेकिन, हमारा ग्रुप अच्छा है, तो क्या इसका मतलब यह है कि दूसरे लोग बुरे हो गए?!

अलग-अलग रंग इकट्ठा होते हैं तब खूबसूरत इन्द्रधनुष बनता है। इसी तरह अगर हम मिलजुलकर रहते हैं तो खुशियों के रंगों का आनंद ले सकते हैं। चलो देखते हैं कि ची-ची लैन्ड में पक्षी एक-साथ रहते थे या अलग-अलग ग्रुप्स में? क्रिसमस के समय बच्चों के दो ग्रुप्स कैसे एक हो गए? आलू-चिली की फ्रेन्ड्शिप की कहानी में आगे क्या हुआ?

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

December, 2025
Year 13, Issue : 09
Conti. Issue No.: 153
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन: ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

AALOO CHILLY

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

चिली, आलू के साथ फ्रेन्ड्शिप तोड़कर चला गया। सभी आलू से पूछते हैं कि चिली के ऐसे व्यवहार के बाद भी वह चिली का बेस्ट फ्रेन्ड क्यों बने रहना चाहता है? तब आलू अपने बचपन की बात बताता है। सब लोग आलू को 'रंगीन रोतलू' कहकर चिढ़ाते थे। चिली ने आलू को सिखाया था कि जब कोई उसे चिढ़ाए तो उसे एक बड़ी सी स्माइल देना। जब स्केटिंग रिंग पर सब आलू को चिढ़ाएँगे तो क्या वह स्माइल दे पाएगा?

जैसे ही मैंने पैरों में स्केट्स पहने, सभी हाथी के बच्चे मुझे 'रंगीन रोतलू' 'रंगीन रोतलू' कहने लगे।

मुझे फिर से डर लगा, अकेलापन महसूस हुआ। जू...म...करता हुआ चिली उड़ते हुए मेरे पास आया और बोला, 'रंगीन लड़के ने जो सिखाया वो इतनी जल्दी भूल गए? स्माइल...!' और फिर सभी हाथी के बच्चों से जोर से कहा, 'शीश...शीश... तुम सब अपना नाम बताओ। मुझे अपनी नोटबुक में तुम्हारा नाम लिखना है। जब मैं बेस्ट सिंगर बनूँगा तो तुम में से किसी को भी अपना ऑटोग्राफ नहीं दूँगा। तुम लोग मेरे बेस्ट फ्रेन्ड को परेशान करते हो न!' बोलो, अभी तो वह सिंगर भी नहीं बना था, लेकिन उसका रौब विनर जैसा था। उसकी बात सुनकर मुझे हँसी आ गई।

मुझे हँसता हुआ देखकर वह जोर से चिल्लाया, 'रंगीन रोतलू! तुम तो जल्दी सीख गए...' यह सुनकर मेरे चेहरे पर और बड़ी स्माइल आ गई।

उस स्माइल ने मैजिक कर दिया। जब भी वे लोग मुझे चिढ़ाते तो मैं स्माइल करता। इसलिए अब उन्हें मुझे 'रंगीन रोतलू' कहकर चिढ़ाने में मज़ा आना बंद हो गया। कुछ ही दिनों में उन्होंने मुझे चिढ़ाना बंद कर दिया। बस, उसके बाद मैं और चिली कभी अलग नहीं हुए।

पार्सली, जो अभी तक चिली से गुस्सा था वह कहने लगा, 'तुम लोगों को किसी को पता नहीं है, मेरा चिली भाई तो वर्ल्ड का बेस्ट भाई है।'

मैंने पार्सली से कहा, 'कुछ भी हो जाए, मैं और चिली कभी अलग नहीं होंगे। चलो, हम उसे ढूँढ़ निकालें।'

हम सब चिली को जंगल में ढूँढ़ने निकल पड़े। पार्सली आगे-आगे उड़ गया। सबसे पहले हम तालाब पर गए। वह वहाँ पर नहीं था। स्कूल गए, वहाँ भी नहीं था। फिर हम चिली के घर गए। वह वहाँ पर भी नहीं था। चिली की मम्मी भी हमारी

बातें सुनकर चिली को ढूँढ़ने निकलीं। फिर मुझे याद आया कि वह ज़रूर नदी पर गया होगा। वही नदी, जहाँ हम बेस्ट फ्रेन्ड बने थे। जैसे-जैसे नदी नज़दीक आती गई, मेरा विश्वास बढ़ता गया कि चिली यहीं पर होगा। तभी मुझे नदी में किसी के तैरने की आवाज़ सुनाई दी। मैं खुश हो गया कि चिली मिल गया। मैं दौड़कर आगे गया।

देखा तो पार्सली नदी में तैर रहा था। पार्सली को देखकर पहली बार मुझे गुस्सा आया। मैने उसे गुस्से से पूछा, 'पार्सली, तुम चिली को ढूँढ़ने के बजाय यह क्या कर रहे हो?'

चिली नदी किनारे भी नहीं मिला, तो आखिर चिली गया कहाँ ? और यह पार्सली चिली को ढूँढ़ने के बजाय नदी में क्यों तैर रहा है?

यह तो नई ही बात है!

जब भी किसी से मिलें, तो मिलने से पहले प्रार्थना करें कि एक-दूसरे के साथ भेद नहीं रखना है, एक-दूसरे के नेगेटिव नहीं देखना है, एक-दूसरे को दुःख नहीं देना है, प्रेम से और अभेदता से रहना है।

अलग होने के बाद किसी के नेगेटिव देखे हों, किसी के बारे में नेगेटिव बोला हो, किसी के नेगेटिव किसी और से कहे हों या किसी को हमसे दुःख हुआ हो तो उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए।

यदि कोई हमारे साथ मिक्स न हो तो उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए - हे दादा भगवान, वह अच्छी तरह सबके साथ मिक्स हो सके, हम एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहें, उसको हमसे दुःख ना पहुँचे।

एक निश्चय करना कि सामने वाला भेद रखे फिर भी हम भेद नहीं रखेंगे।

ची-ची लैन्ड

ची-ची लैन्ड में कई तरह के पक्षी रहते थे। अलग-अलग रंग-रूप के। सालों से यह खूबसूरत ची-ची लैन्ड दो हिस्सो में बँट गया था। ची-ची लैन्ड के किसी नक्शे में ये हिस्से नहीं थे। लेकिन पक्षियों के दिलों में जरूर थे। ये दो हिस्से थे, फ्लायर्स (उड़ सकने वाले पक्षी) और नॉन फ्लायर्स (नहीं उड़ सकने वाले पक्षी)।

फ्लायर्स ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर आलीशान घरों में रहते थे। पता नहीं क्यों, लेकिन वे अपने आपको नॉन-फ्लायर्स से ऊँचा समझते थे। यह बात पीकू पेंगुइन की समझ में नहीं आती थी। पीकू उड़ नहीं सकता था, लेकिन उसे ऐसा भी नहीं लगता था कि उड़ना ही दुनिया का सबसे श्रेष्ठ काम है। पीकू पेंगुइन और ओसो

शुतुरमुर्ग 'ओ परिंदा' नाम का एक कैफ़े चलाते थे। इस कैफ़े में फ्लायर्स और नॉन-फ्लायर्स दोनों आते थे। लेकिन फ्लायर्स नॉन-फ्लायर्स से अलग ही बैठते थे।

एक दिन एक कीवी, जो उड़ नहीं सकता था, फ्लायर्स के साथ जाकर बैठ गया। उसने उत्साहित होकर फ्लायर्स से पूछा, 'कहाँ घूम कर आए तुम सब? उस जगह की कुछ बातें बताओगे?'

प्रश्न तो बहुत सादा था, लेकिन सभी ने कीवी को ऐसे देखा जैसे उसने कोई बड़ी गलती कर दी हो! और इस तरह अपनी बातों में लगे रहे मानो उन्होंने उसकी बात सुनी ही न हो।
कीवी घबराकर दूसरी टेबल पर चला गया।

यह देखकर पीकू ने ओसो से पूछा, 'उनके पास उड़ने के लिए पंख हैं, क्या वे इसलिए खास हैं?'

ओसो ने कहा 'जो किसी को नीचा समझते हैं वे खास कैसे हो सकते हैं!'

कुछ दिनों बाद पॉपी तोते का बर्थ-डे था। पॉपी ने अपने बर्थ-डे की पार्टी रखी। सभी फ्लायर्स को पार्टी में आने का आमंत्रण मिला था, लेकिन नॉन-फ्लायर्स को नहीं।

पॉपी ने 'ओ परिंदा' कैफ़े से सबके लिए पिज़्ज़ा ऑर्डर किया। पीकू पिज़्ज़ा लेकर पॉपी के घर गया। उस दिन उसकी बिल्डिंग की लिफ्ट खराब थी और पीकूभाई तो उड़ नहीं सकते थे। पीकू पिज़्ज़ा लेकर टॉप फ्लोर पर पहुँचा। तब तक वह पूरी तरह से हाँफ चूका था। उसने डॉरबेल बजा कर पिज़्ज़ा दिया। वह पानी पीना चाहता था।

लेकिन पॉपी ने पिज़्ज़ा लेकर धड़ाम से दरवाजा बंद कर दिया। पीकू को दुःख तो हुआ, लेकिन वह इतना थक गया था कि पास ही एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

बीगो ने काँच की खिड़की से पीकू को बाहर कुर्सी पर बैठे देखा तो उसे मज़ाक करने का मन हुआ । वह अपने फ्रेन्ड्स को लेकर बाहर आया और जोर से बोला, 'ऐ नॉन-फ्लायर, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? घर का रास्ता भूल गए हो क्या?'

पीकू ने धीमी आवाज में कहा, 'मैं पिज़्ज़ा देने आया था। थक गया हूँ। इसलिए कुछ देर आराम करने बैठा हूँ।'

'ओह, थक गए हो? तो उड़ के चले जाओ न!' बीगो ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा और फिर उसे नकली पंख लगाकर कहा, 'चलो, इन्हें लगाओ और उड़ जाओ।'

पीकू की आँखों में आँसू आ गए। बीगो और उसके फ्रेन्ड्स जोर से हँस पड़े। पीकू दौड़कर नीचे उतर गया और घर जाकर खूब रोया।

इस बात को बहुत समय बीत गया। पीकू इस बात को भूल गया। लेकिन दोनों ग्रुप के बीच का अंतर वैसा ही बना रहा।

जाड़े के दिन थे। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। अचानक एक सुबह पूरा ची-ची लैन्ड कोहरे से ढक गया। उस दिन ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर रहने वाले फ्लायर्स कहीं जा ही नहीं पाए। उन्हें लगा कि एक-दो दिन में कोहरा छँट जाएगा। लेकिन पता नहीं यह कैसा कोहरा था कि दिन बीतते गए, पर कोहरा छँटने का नाम ही नहीं ले रहा था।

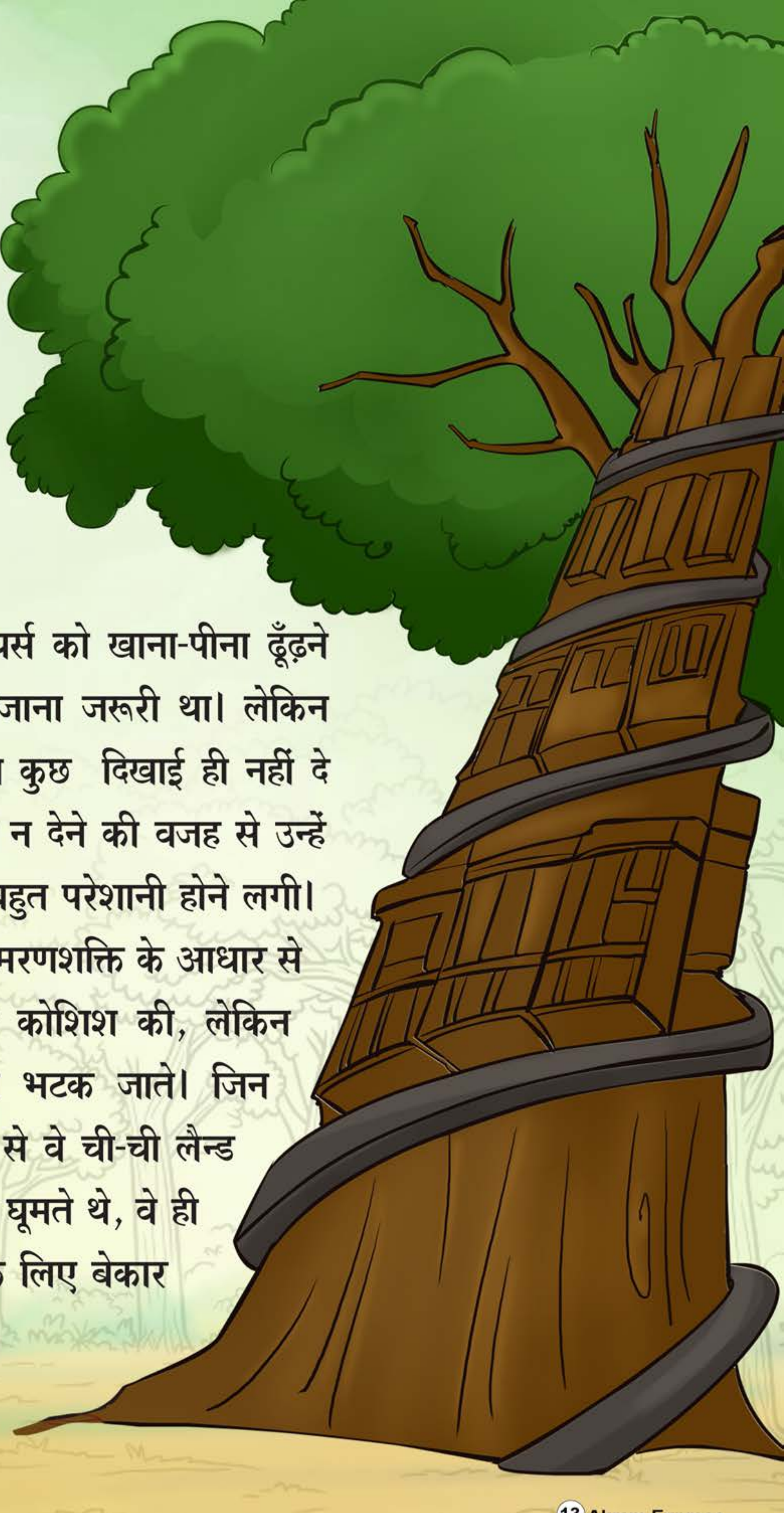

अब फ्लायर्स को खाना-पीना ढूँढ़ने के लिए बाहर जाना जरूरी था। लेकिन कोहरे के कारण कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। दिखाई न देने की वजह से उन्हें खाना ढूँढ़ने में बहुत परेशानी होने लगी। उन्होंने अपनी स्मरणशक्ति के आधार से जगह ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन फिर भी रास्ता भटक जाते। जिन पंखों की वजह से वे ची-ची लैन्ड में खास बनकर घूमते थे, वे ही पंख आज उनके लिए बेकार

हो गए थे। पंख होने के बावजूद वे उड़ नहीं पा रहे थे और उनके पैरों में जमीन पर चलने की ताकत नहीं थी।

जमीन पर रहने वाले नान-फ्लायर्स पर कोहरे का कोई खास असर नहीं पड़ा था। उनकी लाइफ पहले की तरह ही शांति से चल रही थी।

एक दिन बीगो और पॉपी खाना ढूँढ़ने के लिए अपनी बिल्डिंग से बाहर निकले। कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाने की वजह से उनका शरीर कमज़ोर हो गया था और कोहरे के कारण कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था। अचानक बीगो एक बड़े पेड़ से टकराकर नीचे गिर पड़ा। उसे बहुत चोट लगी। पॉपी उसके साथ ही था। लेकिन उसे समझ ही नहीं आया की वह बीगो कि मदद कैसे करें।

उसी समय पीकू और ओसो वहाँ से गुज़र रहे थे। बीगो की

ऐसी हालत देखकर पीकू और ओसो उसे उठाकर अपने घर ले गए। डॉक्टर ने ड्रेसिंग की और कुछ दिनों तक उसे नीचे ही आराम करने की सलाह दी।

बीगो को वह दिन याद आया जब उसने और उसके फ्रेन्ड्स ने पीकू का खूब मज़ाक उड़ाया था। पॉपी ने अपने बर्थ-डे पर उसे घर के अंदर भी नहीं आने दिया था। आज वही पीकू उसे अपने घर लाकर उसकी देखभाल कर रहा था। पीकू से माफी माँगने के लिए बीगो और पॉपी के पास कोई शब्द भी नहीं थे। फिर भी बीगो ने हिम्मत जुटाकर पीकू से कहा, 'पीकू, हमने उस दिन तुम्हारा कितना मज़ाक उड़ाया था! लेकिन आज हमें समझ में आ रहा है कि टाइम बदलते देर नहीं लगती। तुम्हें भी हमारा मज़ाक उड़ाना हो तो उड़ा लो। पंख हैं लेकिन उड़ नहीं सकते, पैर हैं लेकिन चल नहीं सकते।'

पीकू बहुत भावुक होकर बोला, 'मैं क्यों तुम्हारा मज़ाक उड़ाऊँ? जब तुम लोगों ने मेरा मज़ाक उड़ाया था तो मुझे बहुत दुःख हुआ था। मुझे रात को नींद भी नहीं आई थी। ऐसा दुःख मैं कैसे किसी को दे सकता हूँ?'

बीगो और पॉपी उसे देखते ही रह गए।

वातावरण को हल्का करने के लिए पीकू ने हँसते हुए कहा, 'वो सब भूल जाओ। हम तुम्हें पिज़्ज़ा खिलाकर वापस भला-चंगा कर देंगे।'

उस दिन बीगो और पॉपी को समझ में आया कि पंख होने में कोई विशेषता नहीं, लेकिन अगला-पिछला सबकुछ भूलकर एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहना ही सबसे खास बात है!

कुछ ही दिनों में बीगो ठीक हो गया। धीरे-धीरे वातावरण से कोहरा भी छँट गया। ची-ची लैन्ड में अब न तो हवा में कोहरा था और न ही पक्षियों की दृष्टि में। दो हिस्सों में बँटा हुआ ची-ची लैन्ड अब एक परिवार बन गया। अब न तो नक्शे में कोई हिस्से थे और न ही किसी के दिल में!

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मेरी क्लास में ग्रुप्स बन गए हैं। एक ग्रुप दूसरे ग्रुप के साथ मिक्स नहीं होता है और दूसरे ग्रुप को नीचा समझता है। तो हमें क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : ऐसा करने से कभी सुखी नहीं हो सकते। किसी को नीचा समझकर खुद किस तरह सुखी हो सकता है? और आज दूसरे को नीचा समझते हो, अगर आपकी कभी ऐसी स्थिति हो जाए तो? आपको नीचा समझेंगे तो आपको अच्छा लगेगा? इसलिए आपको समझना होगा। इतने बड़े सूर्यनारायण पूरी दुनिया को प्रकाश देते हैं, फिर भी शाम को ढल जाते हैं। तो हम जैसे लोगों के पुण्य का क्या भरोसा? कब समाप्त हो जाए, कोई भरोसा है?

यूँ तो बड़ा रौब जमाता है कि हम पैसेवाले हैं, हम इंग्लिश मीडियम वाले हैं, हम ऐसे और हम वैसे! कब सब कुछ चला जाएगा, कोई भरोसा नहीं। रोने का समय आएगा। इससे अच्छा है कि ईर्ष्या मत करो और किसी के साथ भेद मत रखो। हमें इन्सानियत

बनाए रखनी है। अगर किसी की स्थिति अच्छी नहीं है तो उसे नीचा नहीं समझना चाहिए, अलग ग्रुप्स नहीं बनाने चाहिए। प्रेम से रहो। अगर किसी को कुछ मुश्किल हो और आपके पास ज़रूरत से ज्यादा हो, तो होटल में फिजूल खर्च करने के बजाय मुश्किल में पड़े व्यक्ति की मदद करो। मानवता रखो कि मेरे पास ज़रूरत से ज्यादा है तो दूसरों की कुछ हेल्प करूँगा।

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी एक-दूसरे की गलतियाँ निकालते-निकालते ग्रुप्स बन जाते हैं।

पूज्यश्री : गलतियाँ निकालने से हमारा आनंद चला जाता है। जुदाई में कितना दुःख है और साथ रहने में कितना आनंद है! छोटी-बड़ी गलतियाँ तो हो जाती हैं, लेकिन एडजस्ट होकर चलें तो आनंद बना रहता है। हर एक बात में ऐसा एडजस्टमेन्ट करें कि हमारा आनंद न जाए और सब के साथ मिलजुलकर रहा जा सकें।

मेरी क्रिसमस

मेपल हाइट्स अपार्टमेन्ट में हर साल क्रिसमस बड़े उत्साह से मनाया जाता था। लेकिन इस साल माहौल कुछ अलग ही था। न तो कोई उत्साह दिखाई दे रहा था और न ही कोई तैयारी। बात ऐसी थी कि सभी बच्चे दो ग्रुपों में बँट गए थे।

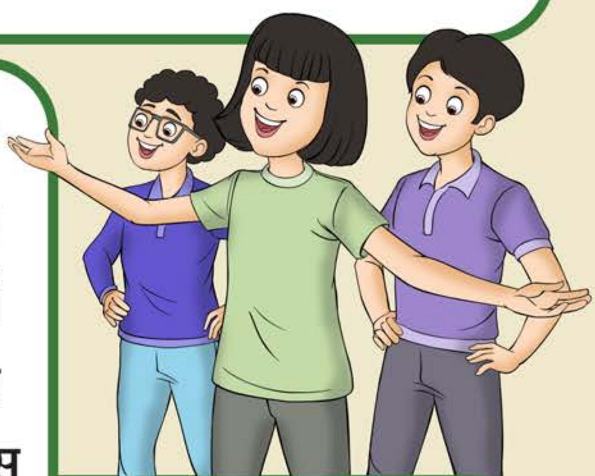

आरोही का ग्रुप क्रिसमस ट्री को भव्य तरीके से सजाना चाहता था और क्लब हाउस में एक बड़ी पार्टी करना चाहता था। जबकि ध्रुव के ग्रुप को साधारण तरीके से क्रिसमस मनाना था। वे खुद ही सब कुछ बनाकर सजाना चाहते थे, घर पर कुकिज़ और केक बनाना चाहते थे और क्रिसमस के गीत गाकर त्यौहार मनाना चाहते थे।

और बस, इसी बात को लेकर बच्चों के दो ग्रुप बन गए। कोई एक-दूसरे के साथ काम करना तो क्या, बात करने को भी तैयार नहीं था।
बस, ये लोग तो सिर्फ दिखावा ही करना चाहते है!
ये लोग तो बिल्कुल डिब्बे जैसे हैं! इनके दिमाग में कभी अच्छे आइडियाज़ आते ही नहीं हैं।

दिया अभी-अभी वहाँ रहने आई थी। वह इतनी स्नेहिल थी कि कुछ ही दिनों में उसने दोनों ग्रुप के बच्चों से दोस्ती कर ली थी। सबके साथ मिलकर क्रिसमस मनाने के लिए वह बहुत उत्सुक थी।

लेकिन जब दोनों ग्रुप आपस में लड़ने लगे तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसने सोचा 'क्रिसमस तो प्रेम और एकता का त्यौहार है और इसी त्यौहार पर एक दूसरे से इतनी दूरी!' दिया को एक आइडिया आया। एक रात उसने दोनों ग्रुप्स को क्लब हाउस में बुलाया।

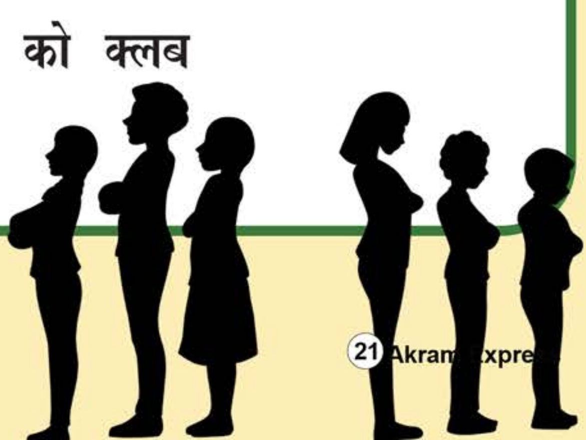

दोनों ग्रुप वहाँ आ पहुँचे। वहाँ जाकर दोनों ग्रुप को दिया पर गुस्सा आया। क्योंकि किसी भी ग्रुप को यह नहीं पता था कि दूसरा ग्रुप भी वहाँ आने वाला है।
सॉरी फ्रेन्ड्स। नाराज मत हो! मैंने तुम लोगों को एक काम के लिए बुलाया है। मुझे तुम्हारी हेल्प की ज़रूरत है।
मेरी आन्टी एक अनाथालय में काम करती हैं। क्रिसमस के मौके पर उन्हें अनाथाश्रम के बच्चों के लिए चीज़ें इकट्ठा करके देनी हैं। इस काम के लिए आन्टी ने मेरी हेल्प माँगी है। तुम लोग प्लीज़ मेरी हेल्प करोगे?

आरोही और ध्रुव के ग्रुप ने एक-दूसरे की तरफ देखा। काम तो अच्छा था। लेकिन एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने के लिए कोई तैयार नहीं था। आरोही ने साफ मना कर दिया। ध्रुव ने कहा, 'हमें भी इनके साथ काम नहीं करना।' दिया ने कहा, 'ओके, एक-दूसरे के साथ काम मत करो, लेकिन अलग-अलग तो कर सकते हो न?'

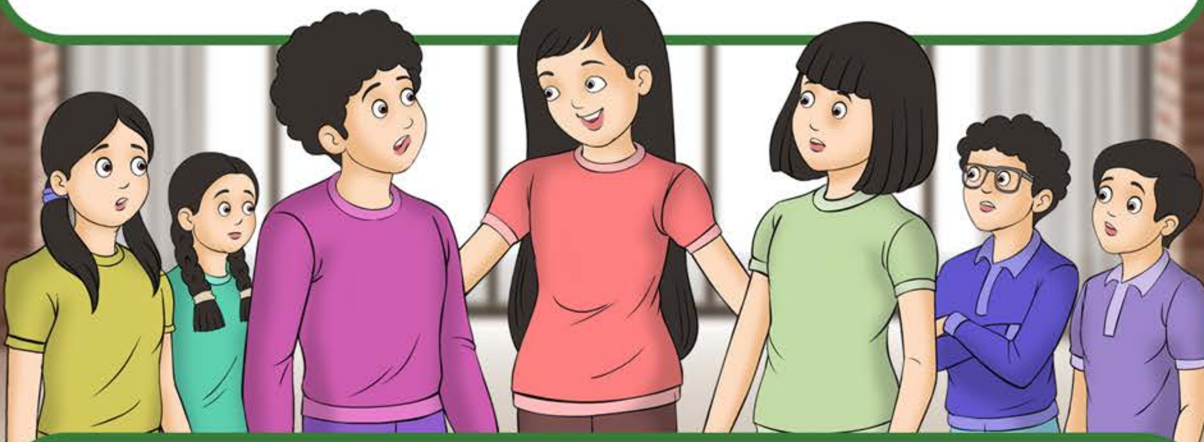

दोनों ग्रुप झिझके। लेकिन अंत में तैयार हो गए। आरोही के ग्रुप ने अच्छे-अच्छे कपड़े और खिलौने पैक किए। ध्रुव के ग्रुप ने क्रिसमस कार्ड्स और टेस्टी कुकिज़ बनाईं। २४ दिसंबर को गिफ्ट्स लेकर सभी अनाथाश्रम पहुँचे।

अनाथाश्रम के बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। एक बच्चे ने आरोही से कहा, 'कुकिज़ बहुत अच्छी हैं। क्या आपने खुद बनाई हैं?' आरोही कुछ कहती उससे पहले ही ध्रुव बोल पड़ा, 'हाँ, हम सबने साथ मिलकर बनाई हैं।' ध्रुव और उसके फ्रेन्ड्स तो बच्चों की खुशी देखकर ही खुश हो गए।
अनाथाश्रम के बच्चों की खुशी के आगे ध्रुव और आरोही के लिए 'मेरे ग्रुप ने किया या उनके ग्रुप ने किया' इस बात का कोई महत्व ही नहीं रह गया था। जब किसी ने ध्रुव को खिलौने की गाड़ी के लिए 'थैंक यू' कहा तो आरोही बोली 'सब साथ मिलकर खेलना!'

इस तरह, जब सबने मिलकर इतना अच्छा काम किया तो ध्रुव, आरोही और उनके फ्रेन्ड्स भी अपना झगड़ा भूल गए। सबके मन में एक ही बात थी कि 'कोई भी क्रिसमस पार्टी हमें इतनी खुशी नहीं दे सकती, जितनी हमें आज मिली।'

अनाथाश्रम से वापस लौटते समय आरोही ने कहा, 'चलो, आज साथ मिलकर हम फिर से क्रिसमस कुकिज़ बनाते हैं।' तो ध्रुव ने कहा, 'हाँ, वह तो बनाएँगे ही, लेकिन क्रिसमस ट्री सजाकर क्लब हाउस में पार्टी भी करेंगे।'

'अरे, यह तो रोल्स बदल गए न? आरोही ध्रुव के रोल में आ गई और ध्रुव आरोही के!' दिया हँसते हुए बोली। आरोही ने कहा, 'ये रोल्स बदलने में तुम्हारा बहुत बड़ा रोल है, दिया। तुमने हमें बेस्ट क्रिसमस गिफ्ट दिया है।'

'और तुम लोगों ने मुझे!' दिया ने कहा। दिया के लिए सबसे बड़ा गिफ्ट यही था कि उसके फ्रेन्ड्स 'मेरा-तेरा' का झगड़ा भूलकर मिलजुलकर प्रेम और एकता से त्यौहार मनाने के लिए तैयार हो गए थे।

Congratulations

फ्यूज़न से शुरू करके ३० दिनों तक लगातार प्रतिक्रमण करके बने हैं ये बच्चे LMHT के प्रतिक्रमण स्टार!

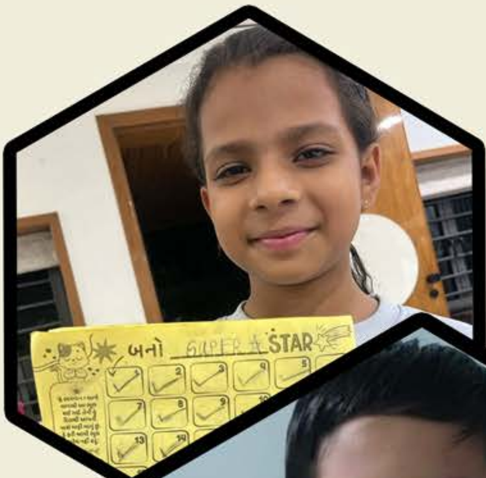

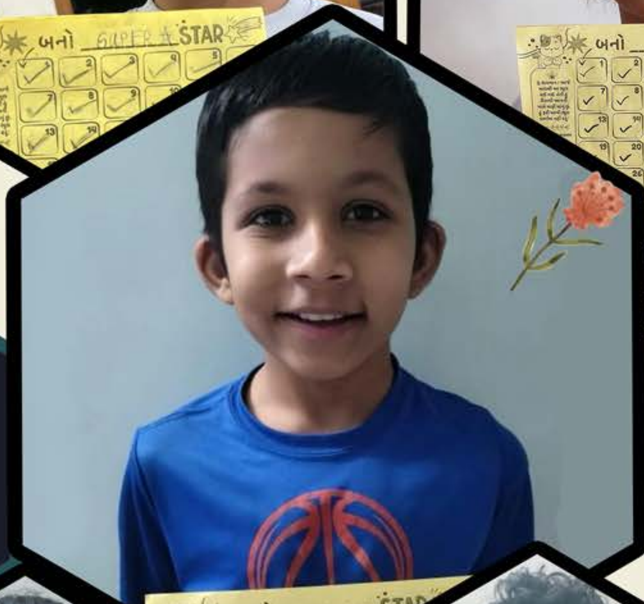

अंतिम पेज पर देखें अन्य प्रतिक्रमण स्टार!

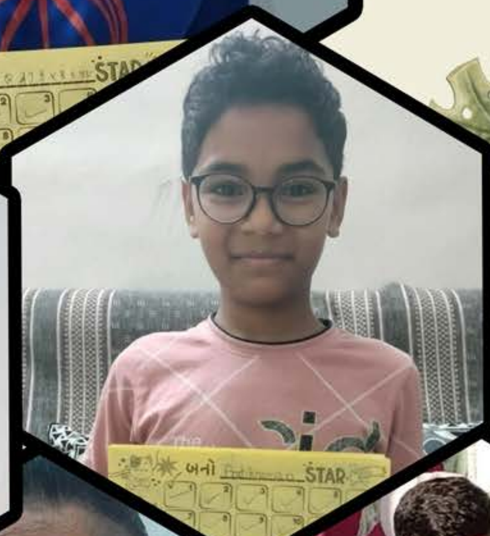

मीठी यादें...

मेरी बारहवीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षा पास आ रही थी। मुझे परीक्षा की बहुत चिंता हो रही थी। परीक्षा के एक-दो दिन पहले नीरू माँ का मुंबई में सत्संग था। मैंने सोचा कि मैं नीरू माँ से बात करूँगी तो कुछ हल निकल आएगा। इसलिए मैं सत्संग में गई।

मैंने सत्संग में नीरू माँ से प्रश्न पूछा, 'मुझे बहुत टेन्शन हो रहा है, नीरू माँ। मैं क्या करूँगी? क्या लिखूँगी?' मुझे लगा कि नीरू माँ कुछ ऐसा कहेंगी कि जिससे मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन नीरू माँ ने मुझे कड़क शब्दों में कहा, 'एक तो आज्ञा में नहीं रहती हो और ऊपर से ऐसा कह रही हो कि मुझे टेन्शन हो रहा है, मुझे आशीर्वाद दीजिए! पहले यह बताओ कि तुम आज्ञा में रहोगी?' मैंने कहा, 'हाँ-हाँ, आज्ञा में रहूँगी।' फिर नीरू माँ ने कहा, 'ठीक है, सत्संग के बाद स्टेज पर आ जाना।'

सत्संग के बाद मैं स्टेज पर गई। नीरू माँ ने मुझसे अपनी गोद में सिर रखने को कहा और फिर उन्होंने विधि की। जैसे ही मैंने नीरू माँ की गोद में सिर रखा मुझे इतना प्रेम महसूस हुआ कि क्या बताऊँ! पता नहीं उनके शब्दों में क्या जादू था कि मुझे भीतर बहुत शांति महसूस हुई और इतना आनंद, आनंद हुआ कि पूछो ही मत! फिर विधि पूरी हुई और मैं नीरू माँ के दर्शन करके घर जाने के लिए निकल पड़ी। उसी समय से मेरे भीतर आनंद शुरू हो गया था और चिंता तो बिल्कुल गायब हो गई थी।

परीक्षा का पेपर लिखते समय मेरे भीतर लगातार 'असीम जय जयकार' चल रहा था। बारह दिन तक परीक्षाएँ चलीं और आखिरी दिन तक भीतर लगातार 'असीम जय जयकार' चलता ही रहा। बंद ही नहीं हुआ। पेपर लिखते समय भीतर 'असीम जय जयकार' चालू था और हाथ अपने आप चलते रहे। और मुझे भीतर इतनी शांति रहती कि दो पेपर साथ होने पर भी कोई चिंता नहीं होती। मैं परीक्षा में अच्छे नंबर से पास हो गई।

ज्ञान मंदिर (गुरुकुल) अडालज में प्रवेश शुरू

ज्ञानमंदिर में रहकर परम पूज्य दादा भगवान के ज्ञान से अपने पुत्र में संस्कारों का सिंचन हो ऐसी इच्छा रखने वाले मात-पिता को अपने पुत्र के इन्टरव्यू के लिए ज्ञानमंदिर, सीमंधर सिटी (अडालज) में एडमिशन हेतु फोन द्वारा रजिस्ट्रेशन करवाना होगा।

प्रवेश केवल कक्षा ५वीं से ९वीं तक के गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम के लिए खुले हैं (प्रवेश केवल लड़कों के लिए है)।

अधिक जानकारी क लिए कृपया नीचे दिए गए फोन नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क समय : १० से १२:३० तक एवं दोपहर ३ से ६:३० बजे तक।

फोन: ९९२४३४४४८१

Click Here : https://linktr.ee/gnanmandirgurukul

आप भी आज से ही शुरू कर सकते हैं और प्रतिक्रमण स्टार बन सकते हैं!

क्लिक करे और प्रतिक्रमण कैलेंडर डाउनलोड करके प्रिंट करें।

https://dbf.adalaj.org/MZvLUf4l